पाठ - 8 **नवम्बर 18 - 24**

रोमियों 7 का मनुष्य कौन है?

सब्त अपराह्न **नवम्बर 18**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : रोमियों 7

याद वचन : *अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं"* (रोमियों 7:6)

रोमियों 7 की अपेक्षा बाइबल में कम ही अध्ययन हैं जिन्होंने अधिक विवाद को उत्पन्न किया है। संलिप्त विषयों के संदर्भ में *द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी* कहती है: "रोमियों 7:14-25 का अर्थ संपूर्ण पत्री में अधिक चर्चित समस्याओं में से एक है। मुख्य प्रश्न गहन नैतिक संघर्ष के विवरण रहे हैं या आत्मकथा से संबंधित हो सकता है, और यदि ऐसा है तो, यह अनुच्छेद पौलुस के मन परिवर्तन से पहले या बाद के अनुभव को इंगित करता है। पौलुस जो पाप के साथ अपने व्यक्तिगत संघर्ष की बात कर रहा है उसके सरलतम शब्दो के अर्थ से स्पष्ट प्रतीत होता है (रोमियों 7:7-11; *एलेन जी० ह्वाईट,ख्रीस्त की ओर कदम, पे. 19; एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 3, पेज 475)* यह निश्चित रूप से सत्य भी है कि वह एक संघर्ष की व्याख्या कर रहा है जो कम या अधिक परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के आत्मिक दानों से जागृत होता और उसके द्वारा मुकाबला करता और प्रत्येक आत्मा के द्वारा अनुभव किया जाता है।"

- *द एस० डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी,* वॉल्यूम *6, पेज 553*

बाईबल के छात्र एकमत नहीं हैं कि रोमियों 7 पौलुस के मनपरिवर्तन के पहले या बाद का उसका अनुभव था। एक कोई-सा भी पद ले सकता है, जो महत्त्वपूर्ण है वह है, यीशु की धार्मिकता हमें ढक लेती है और यह कि उसकी धार्मिकता में हम परमेश्वर के सामने सिद्ध खड़े होते हैं, जो हमें पवित्र करने की प्रतिज्ञा करता है, पाप पर विजय दिलाता है, और "उसके पुत्र के स्वरूप में" हमें दृढ़ करता है (रोमि० 8:29) हमारे लिये ये निर्णायक बिन्दु है - जानना और अनुभव करना जैसे कि हम ""अनन्त सुसमाचार" हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को" सुनाने की कोशिश करते हैं (प्रका० 14:6)

रविवार **नवम्बर 19**

व्यवस्था के प्रति मृत

पढ़ें : रोमियों 7:1-6 पौलुस अपने पाठकों को व्यवस्था के प्रति उनके संबंध को दिखाने के लिये कौन-सा दृष्टान्त प्रयोग करता है, और उस दृष्टान्त के साथ वह कौन-सा बिन्दु (तर्क) बना रहा है?

रोमियों 7:1-6 में पौलुस के दृष्टान्त में कुछ-कुछ संलिप्त है, परन्तु इस अनुच्छेद की सावधानी पूर्वक समीक्षा उसके तर्क को समझने में हमारी मदद करेगा ।

पत्री के संपूर्ण प्रसंग में, पौलुस सिनाई में स्थापित उपासना के तौर-तरीके पर चर्चा कर रहा था; यही है अकसर वह जो शब्द व्यवस्था से अर्थ लगाता है। यहूदियों को इस यथार्थ को समझने में मुश्किल होती थी कि यह तरीका; जो परमेश्वर के द्वारा उन्हें दिया गया था, मसीहा के आने के साथ ही समाप्त होना चाहिए । यही है जिसके विषय पौलुस वर्णन कर रहा था - यहूदी विश्वासी अभी भी त्यागने को तैयार नहीं थे जो उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग रहा था।

पौलुस के दृष्टान्त सार में इस प्रकार है: एक स्त्री पुरुष से ब्याही जाती है। व्यवस्था उसे (स्त्री) जीवन पर्यान्त उसके (पुरुष) साथ बंधी रहती है। उसके जीवन काल

में वह किसी दूसरे पुरुष के साथ नहीं जा सकती। पर जब वह मर जाता है वह उस व्यवस्था से मुक्त हो जाती है जो उसे उसके साथ बांधे हुए थी (रोमि० 7:3)।

पौलुस किस प्रकार विवाह के व्यवस्था के दृष्टान्त को यहूदी तरीके में लागू करता है? रोमि० 7:4,5 जैसे कि स्त्री के पति की मृत्यु उसके पति की व्यवस्था से उसे मुक्त करती है, ऐसा ही शरीर में पुराने जीवन की मृत्यु, यीशु मसीह के द्वारा यहूदियों को व्यवस्था से मुक्त करती है जो उनसे अपेक्षा की जाती थी कि जब तक मसीहा इसके नमूने को पूरा नहीं करता, वे पालन करेंगे।

अब यहूदी "पुनर्विवाह" के लिये स्वतंत्र थे। उन्हें जी उठे मसीहा से विवाह हेतु आमंत्रित किया गया और इस प्रकार परमेश्वर के लिये फलवन्त होना था। यह दृष्टान्त और एक औजार था यहूदियों को विश्वास दिलाने के लिये इसे पौलुस ने व्यवहार किया कि वे अब प्राचीन तरीके को त्यागने को स्वतंत्र थे।

पुन: अन्यत्र दिया गया कि पौलुस और बाइबल दस आज्ञा के प्रति आज्ञाकारिता के विषय कहते हैं, यहाँ पर जोर देकर कहना कोई मायने नहीं रखता कि पौलुस इन यहूदी विश्वासियों को कह रहा था कि दस आज्ञाएँ अब बंधन नहीं रहीं। वे जो इन अवतरणों को वह तर्क बनाने की कोशिश करते हैं - कि नैतिक व्यवस्था खत्म कर दी गई थी - वाकई किसी भी रीति से वह तर्क बनाना नहीं चाहते हैं; वे जो वास्तव में कहना चाहते हैं वह यह है कि केवल सातवां दिन सब्त चला गया है, और बाकी व्यवस्था नहीं। रोमियों 7:4,5 को शिक्षा के तौर पर रूपांतरित करना कि चौथी आज्ञा लोप कर दी गई है या उसके स्थान पर रविवार को स्थापित कर दिया गया है उन्हें यह अर्थ देना है कि शब्दों का कभी अस्तित्व में रहने का अर्थ नहीं।

सोमवार **नवम्बर 20**

पाप और व्यवस्था

यदि पौलुस सिनाई पर संपूर्ण व्यवस्था के तरीके पर बात कर रहा है, रोमियों 7:7 के विषय क्या है, जिसमें वह खासकर दस आज्ञाओं से एक पर चर्चा करता है? क्या वह कल लिया हुआ पद को खण्डन नहीं करता कि पौलुस दस आज्ञाओं के लोप होने के विषय बातें नहीं कर रहा था?

जवाब है "नहीं" हमें पुन: याद रखना चाहिए कि पौलुस के लिये शब्द व्यवस्था का अर्थ है सिनाई में दी गई संपूर्ण कार्य प्रणाली, जिसने नैतिक व्यवस्था को शामिल किया लेकिन इसी में सीमित नहीं हुआ। इस कारण पौलुस इससे उद्धृत कर सकता था, वैसा ही जैसा समूचे यहूदी अर्थव्यवस्था के किसी दूसरे खण्ड से ताकि उसके तर्क कायम रहें। तथापि, मसीह की मृत्यु पर तौर-तरीके समाप्त हो गये, वह नैतिक व्यवस्था को शामिल नहीं करता था जो सिनाई से पूर्व भी अस्तित्व में थी और कलवरी के बाद भी अस्तित्व में है।

पढ़ें रोमियों 7:8-11 व्यवस्था और पाप के बीच संबंध के विषय में पौलुस यहाँ पर क्या कह रहा है?

परमेश्वर ने स्वयं को यहूदियों पर प्रकट किया, विस्तार से उन्हें बताते हुए कि नैतिक, नागरिक, वैधानिक और स्वास्थ्य विषयों में क्या सही और क्या गलत था। उसने विभिन्न व्यवस्थाओं के उल्लंघन स्वरूप दण्ड का भी उल्लेख किया। यहाँ पर परमेश्वर के प्रकट अभिप्राय के उल्लंघन को पाप के रूप में व्याख्या की गयी है।

इस प्रकार, पौलुस वर्णन करता है, उसे जानकारी नहीं होती यदि "व्यवस्था के उस यथार्थ के बगैर जानकारी के, कि लालच करना पाप है। पाप, परमेश्वर के प्रकट

अभिप्राय का उल्लंघन है और जहाँ पर प्रकट अभिप्राय की जानकारी नहीं, वहाँ पर पाप की जानकारी नहीं है। जब वह प्रकट अभिप्राय एक व्यक्ति की जानकारी में आ जाता है, वह उसे पहचान लेता है कि वह एक पापी है और निंदा और मृत्यु के अधीन है। इस अर्थ में वह व्यक्ति मर जाता है।

यहाँ पर पौलुस के तर्क की पंक्ति में और इस पूरे खंड में, वह यहूदियों की अगुवाई करने के लिये एक सेतु के निर्माण की कोशिश कर रहा है - जो "व्यवस्था" को आदरणीय समझते हैं - ताकि इसकी परिपूर्णता के रूप में वे मसीह को देखें। वह सिद्ध कर रहा है कि व्यवस्था आवश्यक थी परन्तु यह कि इसका काम सीमित था। व्यवस्था का अभिप्राय उद्धार था; यह उस उद्धार को अर्जित करने का साधन कभी नहीं रही।

"प्रेरित पौलुस, अपने अनुभव के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण सच्चाई को पेश करता है जो उस काम से संबंधित है जो मनपरिवर्तन में लाया जाना था। वह कहता है, "मैं एक बार व्यवस्था के बिना जीवित था" - उसने दोषपूर्ण महसूस नहीं किया; "परन्तु जब व्यवस्था आयी", जब परेमश्वर की व्यवस्था ने उसके मन को उत्तेजित किया , "पाप जिंदा हुआ, और मैं मर गया।' तब उसने स्वयं को पापी के रूप में देखा, ईश्वरीय व्यवस्था द्वारा दण्ड के भागीदार । चिह्नत करें यह पौलुस था और व्यवस्था नहीं, जो मर गया।" *एलेन जी० ह्वाईट कामेंटस, द एस०डी०ए० बाइबल कामेंटरी, पौलुस 6, पेज 1076*

किस मायने में आप व्यवस्था के आगे "मर" गये हैं? आप उस संदर्भ में कैसे समझ सकते हैं कि यीशु ने आपको उसमें एक नया जीवन देकर आपके लिये क्या किया है?

मंगलवार **नवम्बर 21**

व्यवस्था पवित्र है

पढ़ें : रोमियों 7:12. उस संदर्भ में जो पौलुस चर्चा करता रहा है इस अवतरण को हम कैसे समझते हैं?

क्योंकि यहूदियों ने व्यवस्था को सम्मान दिया, पौलुस हर संभव इसकी प्रशंसा करता है। व्यवस्था अच्छी है जो यह करती है, परन्तु यह वह नहीं कर सकती जो इसे कभी नहीं करना था, वह जो हमें पाप से बचाना है। उस निमित्त हमें यीशु की जरूरत है, क्योंकि व्यवस्था - यह या तो संपूर्ण यहूदी तौर-तरीका या खास तौर पर नैतिक व्यवस्था - उद्धार नहीं ला सकती। केवल यीशु और उसकी धार्मिकता, जो विश्वास के द्वारा हमारे पास आती है, हमें बचा सकती है।

अपनी "मृत्यु" की दशा के लिये पौलुस किसे दोषारोपित करता है, और वह किसे निष्पाप ठहराता है? वह फर्क क्यों महत्त्वपूर्ण है? रोमि० 7:13। रोमियों 7:13 में पौलुस हर संभव बेहतरीन तरीके से "व्यवस्था" को पेश कर रहा है। वह अपने वीभत्स पापमय दृश्य के लिये, व्यवस्था को नहीं; पाप को दोषारोपित करने के लिये चुनता है; वह है, उसके कार्य के "हर प्रकार की कामवासना" (रोमि० 7:8) व्यवस्था भली है, क्योंकि यह परमेश्वर के आचरण का मापदंड है, परन्तु एक पापी के रूप में पौलुस इसके सामने दोषी खड़ा होता है।

पौलुस को एक भयंकर पापी के रूप में दिखाने में पाप को इतना सफल रहा? रोमि० 7:14,15 ।

दैहिक का अर्थ है शारीरिक। इस प्रकार पौलुस को यीशु मसीह की आवश्यकता थी। केवल यीशु मसीह दण्ड को दूर कर सकता था (रोमि० 8:1) केवल यीशु मसीह उसे पाप की दासता से छुड़ा सकता था।

पौलुस स्वयं को "पाप के अधीन बेचा गया" वर्णन करता है। वह पाप का दास है। उसके पास आशा ही नहीं है। वह जो करना चाहता है कर नहीं सकता। वह करने की कोशिश करता है जो भली व्यवस्था उसे करने को कहती है, परन्तु पाप उसे ऐसा करने नहीं देगा।

पौलुस इस दृष्टान्त के द्वारा यहूदियों को उनकी मसीहा की जरूरत को दिखाने की कोशिश कर रहा था। उसने पहले ही संकेत किया था कि विजय केवल अनुग्रह के तहत संभव है (रोमि० 6:14) यही विचार रोमियों 7 में पुन: जोर दिया गया है। "व्यवस्था के अधीन रहने का अर्थ है पाप, एक बेरहम मालिक के लिये दासता।

पाप किस प्रकार दास बनाता है इस संबंध में आपका स्वयं का अनुभव क्या रहा है? क्या आपने पाप के साथ कभी खेलने का प्रयास किया है, सोचते हुए कि आप अपनी इच्छानुसार इसे नियंत्रित करेंगे, स्वयं को केवल क्रूर और बेरहम परिश्रम करवाने वाले मालिक के अधीन पाने के लिये? वास्तविकता में स्वागत है। तब क्यों आपको यीशु पर समर्पित होना है, और प्रतिदिन स्वयं पर मरना है?

बुधवार **नवम्बर 22**

रोमियों 7 का मनुष्य

"और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ, कि व्यवस्था भली है, तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन पाप है,

जो मुझ में बसा हुआ है" (रोमि० 7:16,17) कौन-सा संघर्ष यहाँ पेश किया गया है?

व्यवस्था को आईने की तरह व्यवहार करने के द्वारा, पवित्र आत्मा एक व्यक्ति को अपराधी ठहराता है कि वह व्यवस्था की मांगों को पूरी न करने के द्वारा परमेश्वर को अप्रसन्न कर रहा है। उन मांगों को पूरी करने के प्रयास के द्वारा पापी यह दिखाता है कि वह सहमत है कि व्यवस्था भली है।

किन बिन्दुओं को पौलुस जो पहले ही बना चुका था वह जोर देने के लिये दुहराता था? रोमि० 7:18-20।

किसी व्यक्ति पर मसीह की उसकी आवश्यकता को अंकित करने के लिये, पवित्र आत्मा अकसर उस व्यक्ति को "पुरानी वाचा" के अनुभव द्वारा अगुवाई करता है। एलेन जी० ह्वाईट इस्राएल के अनुभव पवित्र आत्मा को इस प्रकार वर्णन करती है: "लोगों के अपने स्वयं के हृदयों के पाप को महसूस नहीं किया और इस प्रकार मसीह के बिना परमेश्वर की व्यवस्था को मानना उनके लिये असंभव था; और वे नि:संकोच परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश हुए।

इस भावना के साथ कि वे अपनी स्वयं की धार्मिकता को स्थापित करने में सक्षम थे, जैसा उन्होंने घोषणा की "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।" निर्गमन 24:7... केवल कुछ सप्ताह बीते इससे पूर्व वे परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को तोड़ा और एक गाढ़ी हुई आकृति (मूर्ति) के सामने उपासना के लिये घुटने टेके। वाचा के द्वारा जिसे उन्होंने तोड़ा "परमेश्वर की कृपा की उम्मीद वे नहीं कर सकते थे; और अब, उनके पाप और उनके क्षमा की आवश्यकता को देखकर उन्हें उद्धारकर्त्ता की जरूरत को महसूस करने के लिये लाया गया जो अब्राहम की वाचा में प्रकट हुआ" । *एलेन जी० ह्वाईट, पैट्रियार्क्स एण्ड प्रोफेट्स, पेज 371, 372 ।*

दुर्भाग्यवश, प्रतिदिन मसीह में अपने समर्पण को नवीकरण करने में असफल होने के द्वारा, बहुत से मसीही प्रभाव से पाप की सेवा कर रहे हैं, यद्यपि वे इसे स्वीकारने के

लिये नफरत से भरे थे। वे तर्क करते हैं कि, वास्तव में वे पवित्रीकरण के सामान्य अनुभव के दौर से गुजर रहे हैं और यह कि उन्हें ऐसे ही अभी लम्बी दूरी तय करनी है। इस प्रकार, पाप को पहचान हेतु मसीह के पास ले जाने और उनपर विजय हासिल करने के लिये मांग करने की बजाय वे रोमियों 7 के पीछे छिप जाते हैं, जो उन्हें बताता है, जैसा वे सोचते हैं, कि सही करना असंभव है वास्तव में, यह अध्याय कह रहा है कि सही करना असंभव है जब एक व्यक्ति पाप की दासता में है, परन्तु यीशु मसीह में विजय संभव है।

क्या आपको स्वयं और पाप पर विजय हासिल है जिसे मसीह हमें प्रतिज्ञा करता है, यदि नहीं, तो क्यों नहीं? कौन से गलत चुनावों को आप अकेले कर रहे हैं?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 23**

मृत्यु से बचाये गये

पढ़ें : रोमियों 7:21-23 एक मसीही के तौर पर आपने इस संघर्ष को अपने स्वयं के जीवन में कैसा अनुभव किया है?

इस अनुच्छेद में, पौलुस व्यवस्था को अपने (शरीर) मन में पाप और व्यवस्था के साथ सेवा करता है। पौलुस कहता है, "शरीर से" उसने "पाप की व्यवस्था" का सेवन किया (रोमि० 7:25) परन्तु पाप का सेवन और उसकी व्यवस्था को मानने का अर्थ मृत्यु है (देखें रोमि०7:10,11,13)। इस प्रकार, उसका शरीर - जैसा इसने पाप की आज्ञाकारिता में कार्य किया - उपयुक्त रूप से इस प्रकार व्याख्या की जा सकती थी "इस मृत्यु का शरीर।" मन की व्यवस्था परमेश्वर की व्यवस्था है, उसके (परमेश्वर) अभिप्राय का परमेश्वर का प्रकाशन । पवित्र आत्मा के विश्वास तले, पौलुस ने इस व्यवस्था की सहमति दी। उसके मन ने इसे मानने का संकल्प लिया, परन्तु जब उसने कोशिश की वह कर नहीं सका क्योंकि उसका शरीर पाप करने की इच्छा करता था। किसने ऐसे संघर्ष को महसूस नहीं कया है? आप के मन में आप जानते हैं आप क्या करना चाहते हैं, परन्तु आपका शरीर कुछ और करने के लिये कोलाहाल करता है।

इस मुश्किल हालात से जिसमें हम स्वयं को पाते हैं कैसे बचाये जा सकते हैं? रोमि० 7: 24,25 ।

कुछ लोगों ने आश्चर्य किया है कि क्यों अभिव्यक्ति में आनंद के चरम को प्राप्त करने के बाद भी कि "मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद करता हूँ," पौलुस को और एक बार आत्मा के संघर्षों को उल्लेख करने की आवश्यकता हो रही है जिससे वह स्पष्ट रूप से बचाया गया है। कुछ कृतज्ञता की अभिव्यक्ति को प्रारंभिक चिल्लाहट के तौर पर समझते हैं। वे विश्वास करते हैं कि इस प्रकार की चिल्लाहट स्वाभाविक है। "कौन छुड़ाएगा?" वे गरिमामय बचाव के विस्तृत चर्चा को आगे बढ़ाने से पहले उसे नियंत्रित करते हैं (रोमियों 8) पौलुस सार प्रस्तुत करता है जो उसने पिछले पदस्थलों में कहा है और पाप की ताकतों के विरोध में संघर्ष को और एक बार कबूल करता है।

दूसरे सलाह देते हैं कि "मैं स्वयं," से पौलुस का तात्पर्य है विषयवस्तु से मसीह को बाहर छोड़कर खुद पर छोड़ा।" यद्यपि रोमियों 7:24,25 समझे जाते हैं, एक बिन्दु स्पष्ट होना चाहिए: मसीह के बिना हम पर छोड़ा, पाप के विरुद्ध हम असहाय हैं। मसीह के साथ उसमें हमारा नया जीवन है, उसमें एक-हालांकि अहम लगातार खड़ा होगा - विजय की प्रतिज्ञाएँ हमारी हैं यदि हम उन्हें दावा करने के लिये चुनते हैं जैसा कि आपके लिये कोई श्वास नहीं ले सकता या खांस नहीं सकता या छींक नहीं सकता, आपके लिये

मसीह पर समर्पित होने को कोई नहीं चुन सकता। आप अकेले वह चुनाव कर सकते हैं। स्वयं के जीत के लिये जो यीशु में हमें प्रतिज्ञा की गई, उपस्थिति देने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

शुक्रवार **नवम्बर 24**

अतिरिक्त विचार : "व्यवस्था के उल्लंघन में न कोई सुरक्षा है, न भरोसा, न धार्मिकता । मनुष्य परमेश्वर के सामने निर्दोष खड़े होने की उम्मीद नहीं कर सकता और मसीह के सदगुणों के द्वारा उसके साथ चैन से नहीं रह सकता जब वह निरंतर पाप करता है।" - एलेन जी० ह्वाईट, सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1, पेज 213 ।

"पौलुस अपने भाइयों को देखने की चाह करता है कि एक पाप-मोचक उद्धारकर्त्ता की अप्रतिम सुन्दरता ने संपूर्ण यहूदी अर्थव्यवस्था को अहमियत दी। वह उन्हें यह देखने की भी इच्छा करता है कि जब मसीह इस संसार में आया, और मनुष्य के बलिदान के तौर पर मरा, रूप प्रतिरूप के साथ मिल गया।

"मसीह का पाप बलि के तौर पर क्रूस पर मरने के बाद विधि व्यवस्था की ताकत नहीं रह गई थी। फिर भी यह नैतिक व्यवस्था के साथ जुड़ी हुई थी, और शानदार थी। संपूर्णता ने भक्ति की छाप को वहन किया, और परमेश्वर की धार्मिकता, न्याय, और पवित्रता को प्रकट किया और यदि विधान की सेवा समाप्त कर दी जाती तो अच्छा था, वास्तविकता कितनी अधिक शानदार होती, जब मसीह को प्रकट किया गया, अपना जीवन दान देने के लिये पवित्र करने वाला आत्मा उन सभों के लिये जो विश्वास करते हैं।" - *एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंटस, द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी, वॉल्यूम 6, पेज 1095 ।*

विचार विमर्श के लिये प्रश्न :

रोमिया 7:25 में प्रेरित लिखता है: "निदान मैं बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ।" यह कुल मिलाकर स्पष्टतम अनुच्छेद है और इससे हम सीखते हैं कि वही एक व्यवस्था और पाप की व्यवस्था का सेवन करता है। वह उसी समय न्यायोचित ठहराया जाता है और एक पापी भी, क्योंकि वह कह नहीं सकता: "मेरी बुद्धि परमेश्वर की व्यवस्था का सेवन करती है"; न ही वह कह सकता है: "मेरा शरीर पाप की व्यवस्था का सेवन करता है"; परन्तु वह कहता है: "मैं स्वयं" वह है, संपूर्ण मनुष्य, एक और वही व्यक्ति, इस दोहरी गुलामी में है। इस प्रायोजन के लिये वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है कि वह परमेश्वर की व्यवस्था का सेवन करता है और पाप की व्यवस्था का सेवन करने के लिये दया की गुहार भी लगाता है। परन्तु एक शारीरिक (बिना मनपरिवर्तन का) व्यक्ति का कोई कह नहीं सकता कि वह परमेश्वर की व्यवस्था का सेवन करता है। प्रेरित के कहने का अर्थ है: आप देखें, यह वैसा ही है जैसा मैंने पहले कहा: संतगण (विश्वासीगण) उसी समय पापी है जब वे धर्मी हैं। वे धर्मी हैं क्योंकि वे मसीह में विश्वास करते हैं जिसकी धार्मिकता उन्हें ढंक लेती है और उनमें आरोपित की जाती है। परन्तु वे पापी हैं; चूँकि वे व्यवस्था को पूरी नहीं करते और अब भी पाप वासनाएँ हैं। वे अस्वस्थ्य व्यक्ति की तरह हैं जो चिकित्सक द्वारा इलाजरत् हैं। वे वाकई अस्वास्थ्य हैं, परन्तु उम्मीद है और वे चंगे हो रहे हैं। वे अपने स्वास्थ्य को पुन: प्राप्त करने वाले हैं। ऐसे रोगी बहुत ही कष्ट भोगते हैं जो घमंड से चंगा होने का दावा करते हैं, क्योंकि वे फिर से बदतर कष्ट में पड़ेंगे।" - *मार्टिन लूथर, कॉमेंटरी ऑन रोमनस, पेज 114,115* क्या हम लूथर के इस लेख से सहमत हैं या नहीं? कक्षा में अपने जवाबों के कारण बताएँ ।